International Journal of Education and Science Research Review P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org April- 2018, Volume-5, Issue-2 Email- editor@ijesrr.org

टैगोर और अनुशासन

श्रीमती रीतू रानी
सहायक प्रोफेसर
हंस कॉलेज ऑफ एजूकेशन
कोटपूतली, जयपुर

डॉ. सुभाष चन्द्र गुप्ता
प्राचार्य
बाबा मोहन राम किसान पी.जी कॉलेज
भिवाड़ी, अलवर

संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर का जन्म ६ मई १८६१ को बंगाल के एक शिक्षित तथा सम्पन्न परिवार में हुआ था। वे महर्षि देवेन्द्र नाथ के पुत्र थे। देशभक्त होने के साथ-साथ वह एक महान दार्शनिक, साहित्यकार, शिक्षा शास्त्री तथा कर्म-योगी भी थे। इन्होनें साहित्य, समाज-सुधार, शिक्षा और राजनीतिक जागृति आदि विभिन्न क्षेत्रों पर अपनी लेखनी चलाई। ये ठीक है कि टैगोर ने ''शिक्षा'' पर कोई पुस्तक नहीं लिखी परन्तु उनके अनेक लेखों रचनाओं और व्याख्यानों आदि के माध्यम से शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश पड़ता हैं। वे आधुनिक युग के महान शिक्षा-शास्त्री माने जाते हैं। अपने मौलिक विचारों तथा प्रयोगों से इन्होनें भारतीय शिक्षा पद्धति को एक नई दिशा प्रदान की। शिक्षा सम्बन्धी मौलिक विचारों को देने के कारण ही इन्हें ''गुरूदेव'' की उपाधि दी गई।

टैगोर के अनुसार शिक्षा-

''सर्वोच्च शिक्षा वही है जो हमें सूचना ही प्रदान नहीं करती बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि से हमारा समन्वय स्थापित करती है''।
(सम्पूर्ण सृष्टि से उनका तात्पर्य यह है कि संसार की सभी चर-अचर, जड-चेतन, सजीव और निर्जीव समस्त वस्तुओं से हमारा सामन्जस्य स्थापित हो जाना''
उनके अनुसार समस्त सृष्टि से हमारा समन्वय तभी स्थापित हो सकता है जब हमारी समस्त शक्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित हो चुकी हों और इन शक्तियों का पूर्ण विकास केवल शिक्षा द्वारा ही सम्भव है।

इसके साथ-साथ उनका यह भी विश्वास था कि प्रत्येक बालक अद्वितीय क्षमता और प्रतिभा का स्वामी होता है इसलिये शिक्षा के द्वारा इसी क्षमता और प्रतिभा का विकास होना चाहिये।

प्रायः ऐसा माना जाता है कि शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक और छात्रों की ही मुख्य भूमिका होती है। परन्तु टैगोर का मानना था कि शिक्षा अपने उदेश्यों में तभी सफल हो सकती है जब शिक्षक और छात्रों के साथ-साथ अनुशासन को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया जाये, क्योंकि अनुशासन के अभाव में कोई भी शिक्षक छात्रों को सही मार्गदर्शन प्रदान नहीं कर सकता और छात्र भी अपनी प्रतिभा और क्षमता के अनुसार अपना विकास नहीं कर सकते।

अनुशासन

अनुशासन से अभिप्राय है- ''नियमों का पालन एवं आज्ञानुसरण'' अनुशासन से स्वतंत्रता को सार्थकता प्राप्त होती है। ''अनुशासन वह क्रिया है जो नियम, कानून आदि को मानने के लिये हमारे शरीर, दिमाग और आत्मा को नियंत्रित करता है''।
शिक्षा के संदर्भ में अनुशासन शब्द का अर्थ है- ''छात्रों की शक्ति का सदुपयोग करना और दुरूपयोग से बचाना।''
रविन्द्रनाथ टैगोर शिक्षा में अनुशासन पर विशेष बल देते थे और अनुशासन की स्थापना के लिये प्रेम, सहानुभूति, सद्प्रेरणा, संयम, त्याग, प्रार्थना, ध्यान करना, सत्य, अंहिसा, दान, उपासना तथा सद्भावना जैसे गुणों को शिक्षक द्वारा छात्रों में विकसित करना अति अनिवार्य मानते थे। ये समस्त गुण बालक को अनुशसित करने में बहुत सहायक सिद्ध होते हैं।

उनके अनुशासन संबंधी विचार इस प्रकार हैं-

१. **अनुशासन : आत्मानुशासन** – एक कहावत हम सभी अक्सर सुनते आये है कि ''लातों के भूत बातों से नहीं मानतें'' पर टैगोर इस कहावत के पक्षधर नहीं थें। वे बालको में अनुशासन विकसित करने के लिए शारीरिक दण्ड़ के विरोधी थे। क्योंकि शारीरिक दण्ड़ से बालकों में विरोध और विद्रोह की भावना पनपती है। वे सच्चे अनुशासन के लिये आत्मानुशासन का समर्थन करते थे और इसे ही सर्वश्रेष्ठ मानते थे। कभी भी बालकों पर अनुशासन को बाहरी तौर पर थोपना नहीं चाहिए बल्कि आंतरिक भावना के रूप में विकसित करना चाहिये, क्योंकि यह एक नैतिक मूल्य है।

२. **अनुशासन : स्वतंत्रता** – उनके अनुसार स्वतत्रंता प्रत्येक मानव का अधिकार है और मानव की प्रकृति ही ऐसी है कि वह स्वतत्रंता में प्रसन्नता का अनुभव करता है, परन्तु वे स्वछन्दता के समर्थक बिल्कुल भी नहीं थे। उनका मानना था कि प्रत्येक बालक को अपनी रूचि एवं क्षमता के अनुसार कार्य करने की स्वतत्रंता होनी चाहिऐ। अपनी रूचि का कार्य करने में बालक को प्रसन्नता की अनुभूति होती है और प्रसन्न चित्त बालक अपनी अपनी योग्यता एवं क्षमता का पूर्ण उपयोग करते हुये अपने आप को सिद्ध कर सकता है और स्वतः ही अनुशासित रहता है।

उन्होनें शिक्षकों को यह सुझाव भी दिया कि प्रत्येक बालक को उसकी रूचि एवं आवश्यकता के अनुसार पाठ्य सामग्री प्रदान करे और स्वंय भी शिक्षण पद्धतियों का चयन उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर करे। शिक्षकों का यह भी कर्त्तव्य है कि वह बालक को उसकी रूचियों के अनुसार सृजनशील बनाने के लिये उन्हें स्वतंत्र वातावरण और नये-नये रचनात्मक अवसर प्रदान करायें।

३. **अनुशासन : सृजन** –मानव के जीवन में अनुशासन लाने के लिए इन्होनें शिक्षा में रचनात्मक कार्यों पर अत्यधिक बल दिया। कला, संगीत एवं साहित्य मानव की असामाजिक एवं विध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का नाश कर उसे सृजन की ओर अग्रसर करती है। कलात्मकता व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों का विकाश कर उसे संतोष का भाव प्रदान करती है। कला व्यक्ति को प्रकृति के समीप लाकर उसमें सौन्दर्य अनुभूति बढाती है। बालक के शरीर मस्तिष्क और हृदय के विकाश के लिए उन्होनें कला को प्रभावशाली माध्यम माना, वे सृजन शील कलाकार और दार्शनिक दोनों को एक समान महत्व देते थे। इस प्रकार टैगोर का मानना था कि बालक को अनुशासित बनाने के लिए समाज तथा विद्यालय द्वारा अधिक-अधिक रचनात्मक अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

४. **अनुशासन : प्रकृति** – टैगोर के मन में प्रकृति के प्रति अगाध श्रद्धा थी और उनका मानना था कि ''बाल्यकाल में विद्यार्थी को प्रकृति के समीप रहने का अधिक से अधिक अवसर मिलना चाहिए उनकी दृष्टि में चारों ओर फैली प्रकृति हमारी महान शिक्षिका होती है।'' वह हमारे जीवन को सौन्दर्य, आनन्द और मधुर भावनाओं से भर देती है। जिससे मानव स्वतः ही अनुशसित रहता है। प्रकृति मानव को संवेदनशील बनाती है। जो मानव का आधारभूत गुण है।

हम अपने दैनिक जीवन में प्राकृतिक संसाधनों के वास्तविक अनुशासन के अनेक उदाहरण देख सकते है। जैसे सूरज और चाँद का समय पर उगना और छिपना, नदियों का हमेशा बहते रहना, मौसम का समयानुसार बदलते रहना, आकाश का समयानुसार वर्षा करना और रूकना। प्रकृति के यह सभी उदाहरण हमें अनुशसित होकर कार्य करने की प्रेरणा देते हैं।

५. **अनुशासन : शिक्षक एवं माता-पिता की भूमिका** – टैगोर ने यह अनुभव किया कि कुछ माता-पिता बालकों के स्वाभाविक आचरण, रूचि तथा कल्पनाओं की उपेक्षा कर उनसे परिपक्व मनुष्यों की भाँति आचरण करने की अपेक्षा करते हैं जिससे वे कुंठित होते हैं और अनुशासनहीनता कर बैठते हैं। इसलिये वे माता पिता को सुझाव देते है कि बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार करें।

वे बालकों को अनुशासित करने में शिक्षकों की भूमिका सर्वोपरि मानते थे। उनका मानना था कि यदि शिक्षक अपने विषय का विशेषज्ञ होने के साथ-साथ चरित्रवान और स्वयं अनुशासित होगा तथा अपने विद्यार्थियों के साथ प्रेमपूर्ण और सहानुभूति व्यवहार करेगा तो

बालक अपने शिक्षक का अनुसरण करते हुये स्वतः ही अनुशासन में रहेंगे। शिक्षकों द्वारा समय-समय पर खेलकूद, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करते रहना चाहिये जिससे बालक अनुशासित रहते हैं।

शिक्षक के साथ-साथ बालक को अनुशासित रहने के लिये उच्च सामाजिक पर्यावरण की भी आवश्यकता होती है जिसमें रहकर मनुष्य को विभिन्न साधनाओं को करने का अवसर मिलता हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. एम.एल.मित्तल,उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, पीयरसन
२. महेश कुमार पारीक, शिक्षा दर्शन तथा उभरता भारतीय समाज, श्री कविता प्रकाशन जयपुर
३. ओंमकार सिंह त्यागी, उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा, अरिहंत शिक्षा प्रकाशन जयपुर
४. डॉ. रितु शर्मा, डॉ. किरण तिवारी, समकालीन भारत एवं शिक्षा, राखी प्रकाशन आगरा